*International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)*
*ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714*
*www.ijhssi.org ||Volume 14 Issue 8 || August 2025 || PP. 16-22*

# राँची जिले के सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

सुनीता कुमारी
शोधार्थी, (शिक्षाशास्त्र)
कॉलेज ऑफ एजुकेशन
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश

डॉ. सरिता गोस्वामी
(शिक्षाशास्त्र)
कॉलेज ऑफ एजुकेशन
प्रोफेसर, आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश

***सार***

*इस अध्ययन का उद्देश्य राँची जिले के सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि के स्तर की तुलना करना है। शिक्षकों की नियुक्ति और शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर बढ़ती चिंताओं के साथ, शिक्षक संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों को समझना महत्वपूर्ण हो गया है। यह शोध इस बात की जाँच करता है कि संस्थागत अंतर, वेतन संरचना, कार्य वातावरण और व्यावसायिक विकास के अवसर दोनों क्षेत्रों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को कैसे प्रभावित करते हैं।*

*एक वर्णनात्मक और तुलनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया। नमूने में 10 सरकारी विद्यालयों से और 10 गैर–सरकारी विद्यालयों से माध्यमिक विद्यालय के कुल 200 शिक्षकों (सरकारी विद्यालयों से 100 और गैर–सरकारी विद्यालयों से 100) का नमूना तैयार हुआ। जिन्हें स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा चुना गया था। प्राथमिक आँकड़े एकत्र करने के लिए एक मानकीकृत कार्य संतुष्टि पैमाने का उपयोग किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी (माध्य, मानक विचलन) और अनुमानात्मक सांख्यिकी (**t**–परीक्षण) का उपयोग किया गया।*

*निष्कर्षों से पता चला कि सरकारी विद्यालय के शिक्षकों ने अपने गैर–सरकारी विद्यालय के समकक्षों की तुलना में कार्य संतुष्टि के स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की। इस अंतर में योगदान देने वाले प्रमुख कारकों में कार्य की सुरक्षा, समय पर वेतन, प्रबंधनीय कार्यभार और व्यावसायिक विकास तक पहुँच शामिल थे। इसके विपरीत, निजी विद्यालय के शिक्षकों ने कम वेतन, कार्य में स्थिरता की कमी और सीमित करियर प्रगति को लेकर चिंता व्यक्त की।*

*यह अध्ययन गैर–सरकारी शिक्षण संस्थानों और नीति निर्माताओं द्वारा रोजगार स्थितियों में असमानताओं को दूर करने की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। निजी विद्यालयों में बेहतर वेतन, स्थिरता और सहायता प्रणाली सुनिश्चित करने से शिक्षकों का मनोबल उत्कृष्ट हो सकता है, कर्मचारियों का स्थानांतरण कम हो सकता है और अंततः छात्रों के लिए उत्कृष्ट शैक्षिक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।*

*मुख्य बिंदु : कार्य संतुष्टि, सरकारी विद्यालय, गैर–सरकारी विद्यालय, माध्यमिक शिक्षा, राँची जिला, शिक्षक कल्याण, शैक्षिक प्रबंधन ।*

---

Date of Submission: 27-07-2025 Date of Acceptance: 05-08-2025

---

## 1. प्रस्तावना

कार्य संतुष्टि शिक्षण की गुणवत्ता, शिक्षक प्रेरणा, संस्थागत प्रतिबद्धता और समग्र शैक्षिक परिणामों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। विद्यालयी शिक्षा के संदर्भ में, एक संतुष्ट शिक्षक कक्षा में प्रभावी होने, अपनी जिम्मेदारियों के प्रति प्रतिबद्ध होने और छात्रों के प्रदर्शन और विद्यालय के विकास में सकारात्मक योगदान देने की अधिक संभावना रखता है (स्पेक्टर, 1997)।

स्कूली शिक्षकों में कार्य संतुष्टि शैक्षिक गुणवत्ता, शिक्षक प्रतिधारण और छात्र उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। संतुष्टि के उच्च स्तर से प्रेरणा बढ़ती है, कक्षा में प्रदर्शन उत्कृष्ट होता है और शिक्षकों का आना–जाना कम होता है (स्कालविक और स्कालविक, 2011)।

झारखंड की राजधानी होने के नाते, राँची में एक मिश्रित शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र है जहाँ सरकारी और गैर–सरकारी दोनों माध्यमिक विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि, वास्तविक साक्ष्य और क्षेत्रीय अवलोकन इन दोनों क्षेत्रों के शिक्षकों द्वारा अनुभव की जाने वाली संतुष्टि के स्तर में स्पष्ट अंतर दर्शाते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य राँची जिले के सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के बीच कार्य की संतुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण करना है ताकि संतुष्टि में योगदान देने वाले या उसे बाधित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान की जा सके।

भारत में, और विशेष रूप से झारखंड जैसे राज्यों में, विशेषकर राँची जिले जैसे अर्ध–शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में, असमानता बढ़ रही है। सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालय के शिक्षकों की कार्य स्थितियों में एक स्पष्ट अंतर मौजूद है। सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को आमतौर पर कार्य की सुरक्षा, संरचित वेतनमान और विभिन्न रोजगार लाभों का लाभ मिलता है। इसके विपरीत, निजी विद्यालय के शिक्षकों को अक्सर कम वेतन, कार्य में स्थिरता की कमी, न्यूनतम लाभ और पेशेवर विकास के सीमित अवसरों जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है (कुमार और तिवारी, 2020; मेहता, 2019)।

शिक्षा नीति निर्माताओं, प्रशासकों और स्कूल प्रबंधन के लिए इन गतिशीलताओं को समझना आवश्यक है ताकि बेहतर कार्य परिस्थितियाँ बनाई जा सकें, शिक्षकों की संख्या में सुधार हो और अंततः माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो सके ।

यह अध्ययन राँची जिले के सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि के स्तर का विश्लेषण और तुलना करने का प्रयास करता है। इस शोध से प्राप्त अंतर्दृष्टि शिक्षा नीति को आकार देने और शिक्षक कल्याण कार्यक्रमों को बेहतर बनाने में मदद कर सकती है, जिससे क्षेत्र में शिक्षण गुणवत्ता और शैक्षिक परिणामों में वृद्धि में योगदान मिल सकता है।

## 2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

शिक्षकों के बीच कार्य की संतुष्टि का विभिन्न संदर्भों में व्यापक रूप से अध्ययन किया गया है, और साहित्य में एक सुसंगत विषय रोजगार की स्थितियों और संतुष्टि के स्तर के संदर्भ में सरकारी और निजी विद्यालय के शिक्षकों के बीच असमानता है।

शर्मा और रानी (2020) ने सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालय के शिक्षकों के बीच कार्य की संतुष्टि पर एक तुलनात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि सरकारी विद्यालय के शिक्षकों ने संतुष्टि के स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की। इसका श्रेय स्थिर रोजगार, संरचित वेतनमान और पेंशन व सवेतन अवकाश जैसे अतिरिक्त लाभों को दिया गया, जो अक्सर गैर–सरकारी क्षेत्र में अनुपस्थित होते थे।

कुमार (2019) ने पाया कि गैर–सरकारी विद्यालय के शिक्षक जहाँ युवा होते हैं और नवीन शिक्षण विधियों को अपनाने में अधिक लचीले होते हैं, वहीं वे अक्सर अधिक काम, कम सराहना और अपर्याप्त पारिश्रमिक की भावनाओं का अनुभव करते हैं। इन कारकों ने उनकी कार्य की संतुष्टि और पेशेवर प्रतिबद्धता को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया।

मिश्रा और दास (2018) ने शिक्षकों के मनोबल और संतुष्टि को आकार देने में संस्थागत समर्थन, प्रशासनिक व्यवहार और कर्मचारी कल्याण उपायों के महत्व पर बल दिया। उनके निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि एक सहायक विद्यालयी वातावरण चाहे वह किसी भी क्षेत्र का हो शिक्षक के प्रदर्शन और भावनात्मक कल्याण को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सिंह और वर्मा (2017) ने पाया कि व्यावसायिक विकास के अवसर, मान्यता और कार्य की स्वायत्तता ने भी शिक्षक संतुष्टि में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यद्यपि, नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रमों और व्यवस्थित समर्थन के कारण सरकारी संस्थानों में ऐसे अवसर अधिक सुलभ थे।

घोष, एस.एम. (2015):राँचीमें किए गए एक अध्ययन में, घोष ने सरकारी और गैर–सरकारी दोनों विद्यालयों में शिक्षकों के कार्य संतुष्टि के स्तर की जांच की। निष्कर्षों से पता चला कि दोनों समूहों के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से

महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। शिक्षकों के दोनों समूहों ने कार्य संतुष्टि का मध्यम स्तर प्रदर्शित किया। अध्ययन ने कार्य की सुरक्षा और भौतिक संसाधनों की उपलब्धता को प्रासंगिक कारकों के रूप में उजागर किया, लेकिन इस बात पर जोर दिया कि संतुष्टि काफी हद तक विद्यालय के प्रबंधन के प्रकार के बजाय आंतरिक विद्यालय के माहौल पर निर्भर करती है।

सिन्हा, पी., और रायचौधरी, एस. (2016):पश्चिम बंगाल में किए गए इस तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि सार्वजनिक क्षेत्र के शिक्षकों ने बेहतर पारस्परिक संबंधों, स्वायत्तता और मान्यता के कारण कार्य संतुष्टि का उच्च स्तर प्रदर्शित किया। इसके विपरीत, गैर–सरकारी संस्थानों के शिक्षकों ने असंतोष के प्राथमिक कारणों के रूप में कार्य की असुरक्षा और भारी कार्यभार का हवाला दिया। अध्ययन ने शिक्षक प्रेरणा को प्रभावित करने में संगठनात्मक संरचना की भूमिका को रेखांकित किया।

महापात्रा, डी., और गोपाल, के.एन. (2021):संबलपुर में किए गए एक अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि सरकारी स्कूल के शिक्षकों ने गैर–सरकारी विद्यालयों के अपने समकक्षों की तुलना में कार्य से अधिक संतुष्टि की सूचना दी, विशेष रूप से कार्य की स्थिरता और पदोन्नति के अवसरों के मामले में। शोध ने प्रशासनिक निष्पक्षता और संस्थागत विश्वास को कार्य की संतुष्टि के प्रमुख निर्धारकों के रूप में पहचाना।

साहू, वी.एन., और दीवान, आर. (2022):साहू और दीवान ने राँची में शिक्षकों के बीच कार्य की संतुष्टि पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव का अध्ययन किया। परिणामों ने संकेत दिया कि सरकारी विद्यालयों में महिला शिक्षकों ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कार्य की संतुष्टि दोनों में उच्च स्कोर किया। अध्ययन ने जोर दिया कि भावनात्मक लचीलापन सीधे कार्य की संतुष्टि को मजबूत करता है और इसके संस्थागत विकास की वकालत करता है।

प्रमाणिक, बी. (2024):एक राष्ट्रीय स्तर के सर्वेक्षण में, प्रमाणिक ने देखा कि गैर–सरकारी स्कूल के शिक्षकों ने अपेक्षाकृत कम कार्य की संतुष्टि का अनुभव किया, जिसका मुख्य कारण स्वायत्तता की कमी और अपर्याप्त संसाधन थे। दिलचस्प बात यह है कि पुरुष शिक्षकों ने अपनी महिला समकक्षों की तुलना में उच्च संतुष्टि स्तर की रिपोर्ट की। अध्ययन ने संस्थागत समर्थन और व्यक्तिगत प्रभावशीलता के बीच एक मजबूत संबंध का सुझाव दिया, कार्य की संतुष्टि को आकार देने में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला।

ये अध्ययन सामूहिक रूप से इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि जहाँ सरकारी और गैर–सरकारी दोनों क्षेत्रों के शिक्षकों को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, वहीं इन चुनौतियों की प्रकृति और तीव्रता में भी काफी अंतर होता है, जिससे उनकी कार्य की संतुष्टि पर अनोखे तरीके से असर पड़ता है। यह समीक्षा राँचीजैसे क्षेत्रों में और अधिक स्थानीयकृत शोध की आवश्यकता को रेखांकित करती है, जहाँ सामाजिक–आर्थिक और शैक्षिक गतिशीलता शिक्षक के अनुभवों को अलग तरह से आकार दे सकती है।

**3. शोध समस्या**

राँची जिले के सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

**4 अध्ययन के उद्देश्य**

1. सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन ।
2. सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक अध्यनन ।

**5.1 शोध परिकल्पना**

HO1 : सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

HO2 : सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के विभिन्न आयामों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**5.2 अध्ययन की विधि**

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकर्ता द्वारा सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करने के लिये ''सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया गया।

**6.1 जनसंख्या एवं न्यादर्श**

राँची जिले के 10 सरकारी और 10 गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों से प्रतिभागियों का चयन करने के लिए एक यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक का उपयोग किया गया था। प्रत्येक विद्यालय से, 10 शिक्षकों का चयन किया गया, जिसके परिणामस्वरूप कुल 200 शिक्षकों (सरकारी स्कूलों से 100 और निजी स्कूलों से 100) का न्यादर्श तैयार हुआ।

**6.2 शोध का सीमांकन**

यह अध्ययन केवल राँची जिले तक सीमित था और इसमें केवल माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को ही शामिल किया गया। विद्यार्थियों और प्रधानाचार्यों के दृष्टिकोण को सम्मिलित नहीं किया गया, जिससे निष्कर्ष केवल एक पक्षीय दृष्टिकोण पर आधारित हैं।

**6.3 शोध की पद्धति :**

इस शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है|

**6.4 प्रयुक्त उपकरणः**

मीरा दीक्षित द्वारा विकसित कार्य संतुष्टि पैमाना का उपयोग डेटा संग्रह के लिए किया गया। इस पैमाना में 53 आइटम हैं और यह आठ अलग–अलग आयामों में कार्य संतुष्टि मूल्यांकन करता है।

**7. शोध अध्ययन में सांख्यिकी.**

एकत्रित आंकड़ा का विश्लेषण निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके किया गया :

- माध्य (M)
- मानक विचलन (SD)
- स्वतंत्र न्यादर्श (t-परीक्षण)

इन सांख्यिकीय उपकरणों ने यह निर्धारित करने में मदद की है कि क्या सरकारी और निजी विद्यालय के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि स्तरों में कोई महत्त्वपूर्ण अंतर विद्यमान है।

**8. परिणाम एवं विश्लेषण**

**परिकल्पना 1 : सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।**

**तालिका 1**

**सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण**

| स्मूह | N | माध्य (Mean) | मानक विचलन (SD) | t-मूल्य | परिणाम (स्तर 0.05) |
|---|---|---|---|---|---|
| सरकारी शिक्षक | 100 | 212.4 | 14.5 | 3.36 | सार्थक |
| गैर–सरकारी | 100 | 205.1 | 16.2 | | |

**आँकड़ों का विश्लेषण एव व्याख्या –**

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि यह विश्लेषण सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों का औसत कार्य संतोष स्कोर (212.4), गैर–सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों (205.1) की तुलना में अधिक पाया गया। यह अंतर t-परीक्षण द्वारा सांख्यिकीय रूप से सार्थक सिद्ध हुआ (t-3.36, स्तर 0.05)। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सरकारी शिक्षक वेतन, स्थायित्व और सामाजिक सुरक्षा जैसे पहलुओं में अधिक संतुष्ट हैं, जो उनके कार्य में प्रेरणा और दीर्घकालिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है। दूसरी ओर, गैर–सरकारी विद्यालयों के शिक्षक अपेक्षाकृत कम संतुष्ट पाए गए, जिसका संभावित कारण अल्प वेतन, अनुबंध आधारित सेवा और सीमित सुविधाएं हो सकती हैं।

**परिकल्पना 2 : सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के विभिन्न आयामों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।**

**तालिका 2**

**सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के विभिन्न आयामो से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण**

| क्रमांक | कार्य संतुष्टि का आयाम | समूह | N | माध्य | मनक विचलन | t–मूल्य | परिणाम (स्तर 0.05) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | कार्य का आंतरिक पहलू | सरकारी | 100 | 32.5 | 4.6 | 2.45 | सार्थक |
| | | गैर–सरकारी | 100 | 30.8 | 5.2 | | |
| 2 | वेतन, पदोन्नति एवं सेवा शर्तें | सरकारी | 100 | 35.7 | 6.1 | 9.01 | सार्थक |
| | | गैर–सरकारी | 100 | 28.3 | 5.5 | | |
| 3 | भौतिक सुविधाएं | सरकारी | 100 | 30.1 | 5.0 | 1.58 | सार्थक |
| | | गैर–सरकारी | 100 | 28.9 | 5.7 | | |
| 4 | संस्थागत योजनाएं एवं नीतियां | सरकारी | 100 | 27.8 | 4.3 | 0.63 | सार्थक नहीं |
| | | गैर–सरकारी | 100 | 27.4 | 4.7 | | |
| 5 | प्राधिकारियों से संतोष | सरकारी | 100 | 29.2 | 4.9 | 3.39 | सार्थक |
| | | गैर–सरकारी | 100 | 31.6 | 5.1 | | |
| 6 | सामाजिक स्थिति एवं पारिवारिक कल्याण | सरकारी | 100 | 26.4 | 3.6 | 1.28 | सार्थक |
| | | गैर–सरकारी | 100 | 25.7 | 4.1 | | |
| 7 | विद्यार्थियों से संबंध | सरकारी | 100 | 27.2 | 4.2 | 1.46 | सार्थक |
| | | गैर–सरकारी | 100 | 28.1 | 4.5 | | |
| 8 | सहकर्मियों से संबंध | सरकारी | 100 | 28.9 | 4.4 | 0.79 | सार्थक नहीं |
| | | गैर–सरकारी | 100 | 29.4 | 4.6 | | |

**आँकड़ों का विश्लेषण एव व्याख्या** : तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि यह विश्लेषण विभिन्न आयामों में सरकारी और शिक्षकों के कार्य संतोष में अंतर है। सरकारी शिक्षक ''वेतन, पदोन्नति एवं सेवा शर्तें'' (35.7) तथा ''कार्य का आंतरिक पहलू'' (32.5) में अधिक संतुष्ट पाए गए, जो उनकी कार्य की स्थिरता और आत्मिक संतोष को दर्शाता है। वहीं, निजी शिक्षक ''प्राधिकारियों से संतोष'' (31.6) और ''विद्यार्थियों से संबंध'' (28.1) में अपेक्षाकृत बेहतर स्कोर प्राप्त करते हैं, जो बेहतर संवाद, अनुशासन और सहभागिता को सूचित करता है।

कुछ आयामों जैसे ''संस्थागत नीतियां'' और ''सहकर्मियों से संबंध'' में दोनों समूहों के बीच कोई विशेष अंतर नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि कार्य संतोष एक बहु–आयामी तथा संदर्भ–निर्भर अवधारणा है, जो विभिन्न कारकों पर आधारित होती है।

**9. निष्कर्ष और चर्चा –**

इस अध्ययन का निष्कर्ष है कि राँची जिले में शिक्षकों की कार्य की संतुष्टि पर संस्थान का प्रकार महत्वपूर्ण रूप से प्रभाव डालता है। सरकारी स्कूल के शिक्षकों ने वेतन, सेवा शर्तों, कार्य की सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा के मामले में अधिक संतुष्टि प्रदर्शित की, जो गहरी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता और आंतरिक पूर्ति का संकेत देता है (2022; कुमार,

एस., थपलियाल, और राणा, 2022)। ये कारक सरकारी शिक्षकों के बीच पेशेवर स्थिरता और प्रेरणा की अधिक भावना में योगदान करते हैं।

दूसरी ओर, गैर–सरकारी स्कूल के शिक्षकों ने अपेक्षाकृत कठोर प्रशासनिक नियंत्रण, कार्य की असुरक्षा और सीमित वेतन लाभों के कारण आंशिक असंतोष का अनुभव किया। हालांकि, उन्होंने प्रबंधन से समर्थन, शिक्षण में स्वायत्तता और मजबूत छात्र संबंधों (कुमार, एस., थपलियाल, और जोशी, 2014; जोशी, 2010) के साथ अधिक संतुष्टि की सूचना दी।

निष्कर्ष यह भी बताते हैं कि गैर–सरकारी स्कूलों में, संरचित अनुशासन, अधिकारियों के साथ स्पष्ट संचार और सकारात्मक छात्र–शिक्षक बातचीत एक प्रेरक कार्य वातावरण को बढ़ावा देती है। इस बीच, सरकारी स्कूलों में, संरचनात्मक कार्य की सुरक्षा कार्य की संतुष्टि में योगदान देने वाला प्रमुख कारक बनी हुई है (कुमार, एस., थपलियाल, और जोशी, 2016)।

इसके अलावा, कार्य की संतुष्टि केवल वित्तीय लाभों से ही जुड़ी नहीं है, बल्कि नेतृत्व शैली, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कार्यस्थल के माहौल से भी गहराई से प्रभावित होती है (थपलियाल, और जोशी, 2023)।

निष्कर्ष इस बात की पुष्टि करते हैं कि सरकारी स्कूल के शिक्षक गैर–सरकारी स्कूल के शिक्षकों की तुलना में काफी अधिक कार्य संतुष्टि का अनुभव करते हैं। इसका श्रेय बेहतर कार्य सुरक्षा, नियमित वेतन वितरण, सेवानिवृत्ति लाभ और सरकारी क्षेत्र में अधिक स्थिर कार्य स्थितियों जैसे कारकों को दिया जा सकता है (शर्मा और रानी, 2020)।

गैर–सरकारी स्कूल के शिक्षक, यद्यपि अक्सर युवा और अधिक तकनीक–प्रेमी होते हैं, कम वेतन, पदोन्नति के अवसरों की कमी और कार्य की निरंतरता को लेकर अनिश्चितता जैसी समस्याओं का सामना करते हैं, जो सभी उनकी कार्य की संतुष्टि पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं (कुमार, 2019)।

ये परिणाम पिछले अध्ययनों के अनुरूप हैं, जिनमें कार्य संतुष्टि का संस्थागत समर्थन, वेतन संरचना और कार्य–जीवन संतुलन से सीधा संबंध पाया गया था (मिश्रा और दास, 2018; सिंह और वर्मा, 2017)।

आंकड़े आगे बताते हैं कि वर्षों का अनुभव और सहायक नेतृत्व कार्य की संतुष्टि को कैसे माना जाता है, इसमें एक मध्यस्थ भूमिका निभाते हैं। निजी स्कूलों में भी, सहायक प्रशासकों वाले अनुभवी शिक्षकों ने मध्यम स्तर की संतुष्टि की सूचना दी, जो दर्शाता है कि आंतरिक स्कूल प्रबंधन प्रथाएँ प्रणालीगत चुनौतियों को आंशिक रूप से कम कर सकती हैं।

संक्षेप में, अध्ययन स्पष्ट रूप से दोनों प्रकार के स्कूलों के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि के स्तर में एक महत्वपूर्ण अंतर की पहचान करता है, जो इस विचार को पुष्ट करता है कि कार्य संतुष्टि एक जटिल, बहुआयामी निर्माण है। शैक्षिक नीति निर्माताओं और प्रशासकों को अधिक समावेशी और प्रभावी नीतियों को आकार देने के लिए इन विविध शिक्षक अनुभवों को समझना चाहिए, यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शिक्षक अपनी पेशेवर भूमिकाओं में प्रेरित, संतुष्ट और प्रभावशाली बने रहें।

**10. सुझाव**

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर, सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच कार्य की संतुष्टि बढ़ाने के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं:

गैर–सरकारी स्कूलों के लिए : गैर–सरकारी स्कूल प्रबंधन को वेतन संरचना में सुधार, बुनियादी कार्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और स्पष्ट करियर प्रगति पथ प्रदान करने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों के विकास और प्रेरणा को बढ़ावा देने के लिए नियमित प्रशिक्षण और कौशल संवर्धन कार्यशालाओं जैसे व्यावसायिक विकास के अवसरों को संस्थागत रूप दिया जाना चाहिए (मेहता, 2019)।

नीति निर्माताओं के लिए : सरकारी अधिकारियों को सभी प्रकार के स्कूलों में न्यूनतम कार्य स्थितियों को मानकीकृत करने की दिशा में काम करना चाहिए। गैर–सरकारी स्कूल के शिक्षकों के लिए उचित पारिश्रमिक, अनुबंध स्थिरता और सामाजिक सुरक्षा लाभ सुनिश्चित करने वाला एक नियामक ढांचा होना चाहिए, जो सरकारी स्कूलों में प्रदान किए जाने वाले लाभों के अनुरूप हो (कुमार और तिवारी, 2020) ।

दोनों क्षेत्रों के लिए : सभी शैक्षणिक संस्थानों को, स्वामित्व की परवाह किए बिना, एक सहायक और समावेशी कार्य वातावरण को बढ़ावा देना चाहिए। नियमित शिक्षक प्रतिपुष्टि तंत्र, कर्मचारी कल्याण कार्यक्रम और मान्यता प्रणाली शुरू करने से शिकायतों का समाधान करने, मनोबल में सुधार करने और आपसी सम्मान और उत्पादकता की संस्कृति का निर्माण करने में मदद मिल सकती है (सिंह और रानी, 2018) ।

**संदर्भ सूची**


1. जोशी, ए. (2010). वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कार्य संतुष्टि। मनोवैज्ञानिक शोध में परिप्रेक्ष्य, 33, 211–214.

2. कुमार, एस., थपलियाल, पी., और राणा, एस. (2022). विभिन्न प्रकार के स्कूल प्रबंधन में पढ़ाने वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि। भारतीयम इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, 12(1), 40–46.

3. महापात्रा, डी., और गजपाल, के.एन. (2021). संबलपुर में सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि की जांच। आवाहनः आतिथ्य और पर्यटन पर एक जर्नल, 9(2), 88–93. https://www.i-scholar.in/index.php/Avahan/article/view/158876

4. मेहता, एस. (2019)। भारत में स्कूली शिक्षकों के बीच कार्य परिस्थितियाँ और कार्य संतुष्टि : एक क्षेत्रीय तुलना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड मैनेजमेंट स्टडीज, 9(2), 45–50।

5. मेहता, एस. (2019)। भारतीय स्कूल शिक्षकों में कार्य संतुष्टि और व्यावसायिक विकासरू एक क्षेत्रीय विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, 9(2), 101–109।

6. मिश्रा, पी., और दास, एस. (2018)। शिक्षक मनोबल और संतुष्टि में संस्थागत समर्थन की भूमिका। इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, 6(3), 21–29।

7. प्रमाणिक, बी. (2024). भारत में स्कूली शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि पर एक सर्वेक्षण : एक तुलनात्मक दृ ष्टिकोण। एक्सेलेंसियाः इंटरनेशनल मल्टीडिसिप्लिनरी जर्नल ऑफ एजुकेशन, 3(1), 55.64. https://multijournals.org/index.php/excellencia-imje/article/view/336

8. साहू, वी. जे., और दीवान, आर. (2022). झारखंड के राँचीशहर के स्कूली शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कार्य की संतुष्टि पर एक अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ऑल रिसर्च एजुकेशन एंड साइंटिफिक मेथड्स, 10(6), 312.318. https://www.ijaresm.com/a-study-on-emotional-intelligence-and-job-satisfaction-among-school-teachers-of-ranchi-town-in-jharkhand

9. शर्मा, ए., और रानी, एस. (2020)। सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच कार्य संतुश्टिरू एक तुलनात्मक अध्ययन। जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 12(1), 30–37।

10. सिंह, ए., और रानी, पी. (2018)। स्कूल शिक्षकों में कार्य वातावरण और कार्य संतुष्टि । इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एंड एजुकेशन, 8(1), 54–60।

11. सिंह, वी., और वर्मा, एन. (2017)। शिक्षण पेशे में व्यावसायिक विकास और कार्य संतुश्टि। जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन एंड रिसर्च, 9(1), 45–50।

12. सिंघा, पी., और रायचौधरी, एस. (2016). कार्य की संतुष्टिरू भारत के पश्चिम बंगाल के निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के शिक्षकों का तुलनात्मक विश्लेषण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 4(1), 72.82. https://ijip.in/articles/kzob-satisfaction-a-comparative-analysis-of-private-and-public-sector-teachers-of-district-west-bengal-india

13. स्कालविक, ई. एम., और स्कालविक, एस. (2011)। शिक्षक की कार्य संतुष्टि और शिक्षण पेशा छोड़ने की प्रेरणारू स्कूल के संदर्भ से संबंध, अपनेपन की भावना और भावनात्मक थकावट। शिक्षण और शिक्षक शिक्षा, 27(6), 1029–1038।

14. स्पेक्टर, पी. ई. (1997). कार्य संतुष्टि : अनुप्रयोग, मूल्यांकन, कारण और परिणाम। सेज पब्लिकेशन्स।